

पद ६८

(रागः लंका सारंग - तालः धमार)

घोर हनुमान महागड लंका जलावत लेत सारंगसुखतान ॥ध्रु. ॥
तीख निनाद ज्वाला धडक उठी। स्वरित तारमों गान ॥१॥ नादब्रह्म
दैवत सब सिद्धि। ध्यान जोग गुरुमुख जोहि पावे। भुगति मुगति
कैलासधाम मिले। चिन्मार्तांड प्रमाण ॥२॥